आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-135 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | दिसंबर 2025 | मूल्य - 5 रूपए

दिल्ली में हुआ स्पोर्ट्स कार्निवल आयोजित

500 से अधिक बच्चों ने खो-खो और कबड्डी जैसे परंपरागत खेलों में की अपनी भागीदारी सुनिश्चित

बालक नामा रिपोर्टर किशन, नैंसी, दीपक आदि

जिस प्रकार जीवन में आगे बढ़ने के लिए शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है, उसी प्रकार जीवन में खेलों का भी उतना ही महत्वपूर्ण योगदान होता है। खेल न केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं बल्कि आत्मविश्वास, सामूहिकता, साहस और अनुशासन की भावना भी विकसित करते हैं। हर वर्ष भारत के खिलाड़ी बैट बॉल, खो-खो, हॉकी, कबड्डी जैसे अनेक खेलों में देश का प्रतिनिधित्व करते हैं और शानदार प्रदर्शन करके भारतवासियों को गर्व और खुशी का अनुभव कराते हैं। इसी भावना को मजबूत करने के उद्देश्य से 29 नवंबर 2025 को दिल्ली के जसोला स्थित डीडीए नेताजी सुभाष स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में चेतना संस्था द्वारा भव्य स्पोर्ट्स कार्निवल का आयोजन किया गया। इस उत्सवमय खेल कार्यक्रम में खो-खो, कबड्डी, स्टापू, हुला हूप, म्यूजिक चेयर, बोरी दौड़ सहित कई खेलों का आयोजन हुआ, जिसमें 500 से अधिक बाल साथियों ने उत्साह, जोश और आत्मविश्वास के साथ भागीदारी निभाई। इस कार्यक्रम में चेतना संस्था के साथ-साथ उदयन केयर, घर, आभास, डॉ ए वी बॉलगा, मातृ सुधा सहित कई संस्थाओं के बच्चों ने भी भाग लिया। दिल्ली, गुरुग्राम, नोएडा और आसपास के अन्य क्षेत्रों से आए बच्चों ने पूरे ऊर्जा के साथ खेलों का आनंद लिया। कार्यक्रम में चेतना संस्था के निदेशक संजय गुप्ता और संस्था का सहयोग करने वाले यूके मूल के तथा वर्तमान में हांगकांग में रहने वाले इंटरनेशनल रग्बी खिलाड़ी टॉबी विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुए। बच्चों ने टॉबी जी का गर्मजोशी से स्वागत किया, उन्हें सम्मानित किया और अपना आभार व्यक्त किया। संजय गुप्ता जी ने अपने संबोधन में बताया कि इस स्पोर्ट्स कार्निवल की कल्पना दो साल पहले की गई थी। उन्होंने कहा कि भारत के पास खो-खो, कबड्डी, हॉकी, पोशांपा, पकड़म-पकड़ाई जैसे अनेक पारंपरिक खेलों की समृद्ध विरासत है, लेकिन आधुनिक समय में बच्चे इन खेलों से दूर होते जा रहे हैं। अपनी संस्कृति और पारंपरिक खेलों को जीवित रखने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया, ताकि बच्चे टीमवर्क, खेल भावना, अनुशासन और आत्मविश्वास सीख सकें। इस खेल उत्सव में कई टीमों का गठन किया गया, जिनके नाम थे ओपी प्लेयर, गली स्मार्ट, एक्टिव चैंपियन, बाहुबली, तारा, लिटिल चैंपियंस, दमदार खिलाड़ी, धाकड़, आग, महारथी, छोटे उस्ताद आदि। जूनियर और सीनियर दोनों श्रेणियों में खो-खो और कबड्डी के रोमांचक मुकाबले हुए। सीनियर खो-खो में ईगल टीम ने पांच अंकों से जीत दर्ज की, वहीं जूनियर खो-खो में पैंथर टीम ने नौ अंकों से शानदार जीत हासिल की। सीनियर कबड्डी में महारथी टीम ने 14 अंकों के साथ जीत दर्ज की और गली स्मार्ट तथा छोटे उस्ताद के मुकाबले में छोटे उस्ताद टीम ने 22 अंकों से बाजी मारी। इन जीतों के बाद बच्चों के चेहरों पर मुस्कान, आत्मविश्वास और गर्व साफ दिखाई दे रहा था। खेल के दौरान संजय गुप्ता और टॉबी बच्चों का उत्साह बढ़ाते रहे। दर्शक बच्चे, साथी खिलाड़ी और संस्था के कार्यकर्ता ढोल नगाड़ों की ताल पर नाचते गाते रहे। स्ट्रीट टू स्ट्रेंथ प्रोजेक्ट की कार्यकताओं द्वारा सुंदर संगीत प्रस्तुत किया, जिस पर बच्चों ने खूब नृत्य किया और आनंद उठाया। मैदान खुशियों, उत्साह और उमंग से भर गया। कार्यक्रम के अंतिम चरण में विजेता टीमों को ट्रॉफी दी गई और सभी प्रतिभागी बच्चों को टी-शर्ट देकर सम्मानित किया गया। खो-खो और कबड्डी सिखाने वाले बड़े साथियों को गुलदस्ता, चुनरी और राजस्थानी पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया। टॉबी ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि खेल हर व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण हैं। चाहे बच्चा हो या बड़ा, सभी को खेल से जुड़ना चाहिए क्योंकि खेल हमें अनुशासन, आत्मविश्वास और आपसी सहयोग सिखाते हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने देखा कि कुछ बच्चों की टीमें छोटी और कमजोर दिखती थीं, फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी, रणनीति के साथ खेला और जीत हासिल की। यह वास्तव में प्रेरणादायक दृश्य था। कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने अपने अनुभव भी साझा किए। 16 वर्ष की एक बालिका अंजू (परिवर्तित नाम) ने कहा कि इस खेल ने उसे टीमवर्क का महत्व सिखाया। 14 वर्ष के बालक राहुल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उन्हें उम्मीद नहीं थी कि वे फाइनल तक पहुंचेंगे, लेकिन साहस और समझदारी से खेलकर उन्होंने जीत हासिल की। 13 वर्ष की बालिका जुबेदा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह शारीरिक रूप से कमजोर महसूस कर रही थी, फिर भी टीम ने हौसला बनाए रखा और जीत दर्ज की। 11 वर्ष की बालिका जेनी (परिवर्तित नाम) ने कहा कि गलतियों से सीखकर आगे बेहतर खेलना सबसे बड़ी सीख रही। अंत में पूरा मैदान खुशी, तालियों और उपलब्धि की भावना से भरा हुआ था। बच्चों ने खेल, संगीत और आनंद के साथ इस दिन को यादगार बना दिया। कार्यक्रम में बालकनामा के संपादक भी मौजूद रहे और यह पूरी जानकारी बच्चों की आवाज के रूप में आप तक पहुंचा रहे है।

साबुन आधारित नवाचार से चमके एहसान, 'बिजनेस ब्लास्टर्स' में पाया दूसरा स्थान

रिपोर्टर प्रीति

दिल्ली सरकार के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम 'बिजनेस ब्लास्टर्स के तहत सर्वोदय बाल विद्यालय, केशवपुरम (दिल्ली) के 14 वर्षीय छात्र एहसान ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन करते हुए दूसरा स्थान प्राप्त किया और अगले चरण के लिए सफलतापूर्वक चयनित हुए हैं। एहसान की इस उपलब्धि ने न केवल उनके परिवार, बल्कि पूरे विद्यालय को गर्व का अनुभव कराया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत एहसान ने साबुन पर आधारित एक अभिनव स्टार्टअप मॉडल प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने कच्चे माल से साबुन तैयार करने की परिकल्पना रखी। उनके इस विचार को चयन समिति ने न केवल व्यावहारिक माना, बल्कि भविष्य के बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप भी बताया। चयन प्रक्रिया के दौरान एहसान ने अपने आत्मविश्वास, स्पष्ट सोच और व्यावसायिक दृष्टिकोण से निर्णायक मंडल के सभी सदस्यों को खासा प्रभावित किया। 'बिजनेस ब्लास्टर्स' कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूली छात्रों में छिपी उद्यमशीलता को पहचान कर उसे प्रोत्साहित करना है। चयनित होने के बाद अब एहसान को सरकार की ओर से बीज धनराशि प्रदान की

जाएगी, जिससे वह अपने व्यवसायिक मॉडल को बड़े स्तर पर विकसित कर सकेंगे। इसके साथ ही उन्हें अनुभवी शिक्षकों और समूह के सदस्यों का मार्गदर्शन भी प्राप्त होगा। अपनी सफलता पर खुशी जाहिर करते हुए एहसान ने कहा कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि उनके एक छोटे से विचार को इतना बड़ा मंच मिलेगा। वहीं विद्यालय के प्रधानाचार्य और शिक्षकों ने भी एहसान को बधाई देते हुए कहा कि ऐसी उपलब्धियां अन्य छात्रों को भी नवाचार करने, लीक से हटकर सोचने और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करती हैं।

बच्चे अपने खर्च के पैसों के लिए कर रहे मलबा बीनने का कार्य

बातूनी रिपोर्टर रहमत व रिपोर्टर किशन

सड़क एवं कामकाजी बच्चों को जब घर से अपने खर्चों के लिए पर्याप्त पैसे नहीं मिलते, तो वे अन्य कार्यों में लिप्त हो जाते हैं। ऐसा ही एक मामला नोएडा में एक मूर्ति के नजदीक स्थित बस्तियों में सामने आया। यहां रहने वाले राहुल (परिवर्तित नाम), 13 वर्ष से जब पत्रकारों ने बातचीत की, तो उसने अपनी स्थिति साझा की। राहुल ने बताया कि वह अपने माता-पिता के साथ किराए की बस्ती में रहता है। उसके माता-पिता सुबह से काम पर चले जाते हैं और शाम करीब 6 बजे घर लौटते हैं। जब बच्चे उनसे अपने खर्च के लिए पैसे मांगते हैं, तो वे केवल 2 या 5 रुपये देकर टाल देते हैं, जिससे उसका खर्च पूरा नहीं हो पाता। राहुल ने आगे बताया कि आसपास के अन्य बच्चों को देखकर और कुछ खाने-पीने की इच्छा के कारण वह भी काम करने निकल जाता है। बस्ती के पास बड़ी-बड़ी इमारतों का निर्माण कार्य चल रहा है, जहां ट्रैक्टरों में मलबा लाया जाता है। बस्ती के अधिकतर बच्चे उसी मलबे को बीनने का काम करते हैं और वह खुद भी मलबा बीनने चला जाता है। जब ट्रैक्टर आता है तो कई बच्चे उस पर चढ़ने की कोशिश करते हैं, जिस कारण ट्रैक्टर का मालिक उन्हें मारने-पीटने लगता है। मलबा बीनने के लिए बच्चे कन्नी और अपने हाथों का इस्तेमाल करते हैं। जो बच्चे हाथों से मलबा बीनते हैं, उनके हाथों में कई जख्म हो जाते हैं और हाथों की खाल छिलने लगती है। दिन भर में मलबा बीनकर बच्चों को लगभग 100 से 150 रुपये तक मिल जाते हैं। इनमें से कुछ पैसे राहुल अपने पास रख लेता है और कुछ घर में दे देता है, जिससे किसी तरह घर का खर्च चल पाता है। इसी कारण अधिकतर बच्चे स्कूल नहीं जा पाते, क्योंकि माता-पिता ध्यान नहीं दे पाते और बच्चे दिन भर ऐसे ही कामों में लगे रहते हैं।

अभिभावकों की अनदेखी के चलते नशे की ओर बढ़ते बच्चे

रिपोर्ट: अमृत

दिल्ली के लॉरेंस रोड की बस्तियों में रहने वाले 13 साल के मुराद (परिवर्तित नाम),ने अपने आसपास रहने वाले एक बच्चे की स्थिति के बारे में बताते हुए कहा कि उसके घर के पास रहने वाला 14 वर्षीय अमन (परिवर्तित नाम) नशे की आदत से जूझ रहा है। मुराद जब अमन के साथ उसके घर गया और उससे बातचीत की, तो अमन ने अपनी दर्दभरी कहानी साझा की। उसने बताया कि उसकी माँ अब उसके साथ नहीं रहती और वह अपने पिता के साथ रहता है। उसके पिता काम तो करते हैं, लेकिन उसे कोई पैसे नहीं

देते, जिसके कारण उसे अपना पेट पालने के लिए खुद काम करना पड़ता है। अमन ने बताया कि वह कभी फैक्ट्री में साफ-सफाई का काम करता है और कभी कूड़ा बीनने का काम कर लेता है। जब उससे नशा करने का कारण पूछा गया, तो उसने कहा कि गलत संगत में पड़कर उसे नशे और सट्टे की लत लग गई। बातचीत के दौरान उसने यह भी बताया कि जो पैसे वह कमाता है, वे उसके पिता उससे छीन लेते हैं। जब उसके पिता की कमाई के बारे में पूछा गया, तो अमन ने बताया कि उसके पिता भी नशा करते हैं। अपनी माँ के बारे में बताते हुए अमन ने कहा कि पिता की नशे की आदत के कारण घर में अक्सर झगड़े होते थे, जिससे परेशान होकर उसकी माँ घर छोड़कर चली गई।

स्मार्टफोन की कमी और प्रदूषण के बीच ऑनलाइन पढ़ाई बनी चुनौती

रिपोर्टर प्रीति

दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण स्तर को देखते हुए प्रशासन ने नर्सरी से पाँचवीं कक्षा तक के स्कूलों को बंद कर पढ़ाई को ऑनलाइन माध्यम में स्थानांतरित कर दिया है। यह निर्णय बच्चों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए लिया गया है, लेकिन एन/86 जैसे समुदायों में इसके कारण कई तरह की चुनौतियाँ सामने आ रही हैं। कम आय वाले और घनी आबादी वाले इलाकों में ऑनलाइन पढ़ाई एक बड़ी समस्या बनकर उभरी है। कई परिवारों के पास केवल एक ही मोबाइल फोन है, जिसे अधिकतर अभिभावक काम पर अपने साथ ले जाते हैं, जिससे बच्चे ऑनलाइन कक्षाओं से वंचित रह जाते हैं। इन्हीं बस्तियों में रहने वाली नूर (परिवर्तित नाम), 11 वर्ष की स्थिति भी ऐसी ही है। नूर की माँ ने बताया कि वह परिवार की अकेली कमाने वाली हैं और उनके दो बच्चे हैं। वह कोठियों में काम करने जाती हैं और पूरे परिवार की जिम्मेदारी उन्हीं पर है। उन्होंने बताया कि स्कूल बंद होने के बाद से बच्चे नियमित रूप से ऑनलाइन कक्षाएँ नहीं ले पा रहे हैं। कभी-कभार एक या दो दिन ऑनलाइन क्लास में शामिल भी होते हैं, तो कक्षा में कुछ पूछे जाने पर नूर जवाब नहीं दे पाती। एक गंभीर सामाजिक पहलू यह भी सामने आया है कि कई घरों में पुरुष अपनी पत्नियों पर भरोसा नहीं करते और उन्हें स्मार्टफोन नहीं देते, जिसके कारण बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई से पूरी तरह वंचित रह जाते हैं। वहीं कुछ बच्चे ऑनलाइन कक्षाओं को स्कूल की छुट्टी समझने लगे हैं और सुबह से शाम तक पटरी पर पिट्ठू जैसे खेलों में व्यस्त रहते हैं, जिसके कारण वे ऑनलाइन क्लास नहीं ले पा रहे हैं। इस तरह प्रदूषण के कारण लिया गया यह निर्णय, स्वास्थ्य सुरक्षा के साथ-साथ शिक्षा के स्तर पर भी गंभीर चुनौतियाँ खड़ी कर रहा है।

कपड़ों और बस्ती के नाम पर बच्चों से छीना जा रहा खेलने का अधिकार

बालकनामा रिपोर्टर - आसिफ

पश्चिमी दिल्ली में रहने वाले बच्चों के लिए अब खेल भी संघर्ष का रूप लेता जा रहा है। खेल खेलना किसे पसंद नहीं होता, लेकिन जब किसी बच्चे को केवल उसके कपड़ों और रहने की जगह के आधार पर खेलने से रोक दिया जाए, तो यह उसके मन को गहराई से आहत करता है। ऐसी ही एक घटना पश्चिमी दिल्ली के कमला नेहरू कैंप में रहने वाले रोहन (परिवर्तित नाम), 14 वर्ष के साथ सामने आई। जब रोहन पास के एक पार्क में खेलने पहुँचा, तो वहां मौजूद लोगों ने उसे सिर्फ इसलिए खेलने से मना कर दिया क्योंकि उसका पहनावा अच्छा नहीं था और वह झुग्गी बस्ती से आता था। पार्क में मौजूद कुछ लोगों ने उससे साफ शब्दों में कहा कि 'यहाँ झुग्गी के बच्चे नहीं खेल सकते।' यह बात रोहन को भीतर तक तोड़ गई। जब बालकनामा रिपोर्टर आसिफ ने रोहन से बातचीत की, तो उसने अपनी पीड़ा साझा करते हुए कहा, 'मैं भी खेलना चाहता हूँ, लेकिन लोग कहते हैं कि मैं झुग्गी से हूँ, इसलिए यहाँ नहीं खेल सकता।' यह कहते समय रोहन बेहद निराश और उदास दिखाई दिया। उसका कहना था कि उसके पास अच्छे कपड़े भले ही न हों, लेकिन खेल के प्रति उसका प्यार किसी से कम नहीं है।

वहीं पास में रहने वाले शिव (परिवर्तित नाम), 12 वर्ष ने भी बताया कि झुग्गी में रहने वाले बच्चों के साथ अक्सर इसी तरह का भेदभाव किया जाता है। हमारा मानना है कि बच्चों को उनके कपड़ों या रहन-सहन के आधार पर नहीं, बल्कि उनके अधिकारों के आधार पर देखा जाना चाहिए। खेल न केवल बच्चों को शारीरिक रूप से मजबूत बनाता है, बल्कि उन्हें आत्मविश्वास और समानता का एहसास भी देता है। ऐसे में झुग्गी में रहने वाले बच्चों को खेल से दूर रखना उनके बचपन और भविष्य से खिलवाड़ करने जैसा है। बातचीत के दौरान समुदाय के लोगों ने भी यह बात रखी कि पार्कों में सभी बच्चों को समान अधिकार मिलने चाहिए, चाहे वे किसी भी वर्ग या बस्ती से आते हों, क्योंकि खेलने का हक हर बच्चे का है।

सरकारी शौचालय होने के बावजूद खुले में शौच को मजबूर बच्चे

बातूनी रिपोर्टर गोलू व रिपोर्टर किशन

नोएडा सेक्टर 14 के नजदीक स्थित बस्तियों में रहने वाले बच्चों ने शौचालय की सुविधा होने के बावजूद खुले में शौच करने को मजबूर होने की पीड़ा साझा की। बच्चों ने बताया कि इस क्षेत्र में 100 से अधिक झुग्गियाँ हैं और बस्ती के सामने एक सरकारी शौचालय बना हुआ है। जब यह शौचालय नया बना था, तब बस्ती के बच्चों को इसका उपयोग करने दिया जाता था। लेकिन बस्ती में कुछ बड़े और शरारती बच्चे शौचालय के भीतर जाकर नल खुले छोड़ देते हैं और लाइट के बटन आदि से छेड़छाड़ करते रहते हैं।

इन हरकतों के कारण शौचालय का कर्मचारी नाराज हो गया और अब उन बच्चों के साथ-साथ उन बच्चों को भी शौचालय में जाने से मना कर देता है, जो ऐसी कोई गलत हरकत नहीं करते।

बच्चों का कहना है कि बस्ती के बड़े लोग तो शौचालय का उपयोग कर लेते हैं, लेकिन बच्चों के साथ भेदभाव किया जाता है। कई बार कर्मचारी बच्चों को शौचालय के बाहर से ही भगा देता है, जिसके कारण उन्हें मजबूरन खुले में शौच के लिए जाना पड़ता है।

बच्चों ने कई बार कर्मचारियों से बात कर यह समझाने की कोशिश की कि वे शरारती नहीं हैं और गलत हरकतें कुछ अन्य बड़े बच्चे करते हैं, लेकिन इसके बावजूद कर्मचारी सभी बच्चों को एक ही नजर से देखकर डांट देता है।

बच्चों ने यह भी बताया कि जब किसी अधिकारी या जांच के लिए कोई व्यक्ति शौचालय पर आता है, तब उन्हें शौचालय में जाने दिया जाता है, लेकिन जैसे ही जांच करने वाले लोग चले जाते हैं, फिर से उनके साथ भेदभाव शुरू हो जाता है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

पानी की तलाश में भटकते कदम, पीछे छूटती पढ़ाई

बातूनी रिपोर्टर रवीना व रिपोर्टर किशन

यह बात पूरा संसार जानता है कि जल ही जीवन है, लेकिन जब पीने के लिए पानी ही उपलब्ध न हो, तो जीवन कितना कठिन हो जाता है, यह दिल्ली की एक बस्ती में रहने वाले बच्चे रोज महसूस करते हैं। जब पत्रकार बच्चों से मिले, तो उन्होंने बड़े दुख के साथ पानी की गंभीर समस्या को साझा किया।

सना (परिवर्तित नाम), 9 वर्ष की एक बालिका ने पानी की कमी से जुड़ी परेशानियों को विस्तार से बताया। बच्चों ने बताया कि वे दिल्ली के कीर्ति नगर की बस्तियों में रहते हैं, जहां लगभग 1000 से अधिक झुग्गी-बस्तियां हैं, जो काफी बड़े क्षेत्र में फैली हुई हैं। इन बस्तियों में पानी की भारी किल्लत है, जिसके कारण बच्चों को रोज कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यहां पाइपलाइन के माध्यम से पानी आता है, लेकिन वह भी केवल सुबह 5:30 बजे से 7:30 बजे तक। पानी मिलने से एक घंटा पहले ही लोग बर्तन लेकर नलों के पास खड़े हो जाते हैं, ताकि उन्हें पानी मिल सके। जैसे ही पानी आता है, वहां भारी भीड़ लग जाती है। पानी भरते समय बड़े लोग धक्का-मुक्की करने लगते हैं और कई बार अपशब्दों का भी प्रयोग होता है। इस धक्का-मुक्की में कई लोग पानी नहीं भर पाते, जिससे अक्सर झगड़े की स्थिति बन जाती है।

सना ने बताया कि बच्चों को भी पानी भरने नहीं दिया जाता। जब वे लाइन में खड़े होते हैं, तो कई लोग उन्हें डांट-फटकार कर हटा देते हैं और यदि बच्चे कुछ कहने की कोशिश करते हैं, तो उनसे गलत तरीके से बात की जाती है। तय समय में सभी को पानी नहीं मिल पाता, जिसके कारण बच्चे स्कूल जाने में देर कर देते हैं। कई बार

ऐसा भी होता है कि पानी बिल्कुल नहीं मिल पाता और इस वजह से वे स्कूल नहीं जा पाते। बस्ती में जिन घरों के सामने पाइपलाइन लगी होती है, वे लोग अक्सर दबदबा दिखाते हैं और पानी देने से मना कर देते हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि उनके मन में मोटर लगाने का विचार आता है, लेकिन पतली गलियों में मोटर लगाना संभव नहीं है और पाइपलाइन में मोटर जोड़ने के लिए भी लोग मना कर देते हैं। सुबह आने वाला पानी केवल बर्तन और कपड़े धोने के काम आता है, वह पीने योग्य नहीं होता। पीने के पानी के लिए बच्चों को एक किलोमीटर से अधिक दूर पैदल जाना पड़ता है, जहां वहां भी पानी के लिए मारामारी रहती है। सिर पर पानी के बर्तन रखकर लाने में काफी समय लग जाता है, जिससे स्कूल पहुंचने में और देरी हो जाती है।

इसी कारण कई बच्चे नियमित रूप से स्कूल नहीं जा पाते। बच्चों का कहना है कि यदि बस्ती में हर घर तक पर्याप्त मात्रा में पानी की पाइपलाइन की व्यवस्था हो जाए, तो उन्हें दूर जाकर पानी नहीं लाना पड़ेगा और वे समय पर स्कूल जा सकेंगे।

पटरी के किनारे बसता बचपन, हर पल रहता है हादसे का खतरा

बालकनामा रिपोर्टर - आसिफ

पश्चिमी दिल्ली की रेलवे लाइन के किनारे बसे कमला नेहरू कैंप में रहने वाले बच्चों की ज़िंदगी हर पल खतरे के साए में गुजर रही है। दिन-रात तेज रफ्तार ट्रेनों की आवाज, धूल और शोर के बीच ये बच्चे खेलने, पढ़ने और जीने को मजबूर हैं।

बालकनामा रिपोर्टर आसिफ से बातचीत के दौरान 11 वर्षीय मोहन (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'ट्रेन बहुत पास से निकलती है। कई बार खेलते-खेलते बहुत डर लगता है, लेकिन खेलने की कोई सुरक्षित जगह ही नहीं है।' इसी कारण बच्चों को मानसिक रूप से भी असुरक्षा और भय का सामना करना पड़ता है। बस्ती में कई बच्चे रेलवे पटरियों के बेहद करीब खेलते नजर आते हैं, जिससे कभी भी कोई बड़ा हादसा हो सकता है। बातचीत के दौरान वहीं रहने वाले 15 वर्षीय सलीम (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'हम गरीब हैं, लेकिन बच्चों की जान तो कीमती है। मजबूरी में हम यहाँ रह रहे हैं, कहीं और जाने का कोई साधन नहीं है। हर दिन डर के साथ गुजरता है।' रेलवे लाइन के पास रहना बच्चों के लिए केवल शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक रूप से भी बेहद खतरनाक है। लगातार शोर और डर बच्चों के मानसिक विकास पर नकारात्मक असर डाल रहा है। रेलवे लाइन के पास रहने वाले बच्चे चाहते हैं कि सरकार उनके लिए सुरक्षित खेल का मैदान और बेहतर रहने की व्यवस्था करे, ताकि उनका बचपन डर और खतरे के बीच न गुजरे।

कंबल को जलता देख बालक की आंखों में आए आँसू

बातूनी रिपोर्टर अर्जुन व रिपोर्टर किशन

जैसे-जैसे ठंड बढ़ती जा रही है, सड़क एवं कामकाजी बच्चे किसी न किसी तरह खुद को ठंड से बचाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन अगर ठंड से बचाव की एकमात्र चीज ही जला दी जाए, तो दर्द और गुस्सा स्वाभाविक है।

ऐसी ही एक पीड़ादायक घटना बस्ती में सामने आई, जिसे सतबीर (परिवर्तित नाम), 12 वर्ष ने रोते हुए साझा किया। सतबीर ने बताया कि वह मूल रूप से बिहार का रहने वाला है और वर्तमान में अपने माता-पिता के साथ नॉएडा के एक मूर्ति के नजदीक स्थित बस्ती में किराए के कमरे में रहता है। जिस मकान में वे रहते हैं, वहां एक कर्मचारी भी रहता है, जो अक्सर नशे की हालत में रहता है। ठंड शुरू होने

से करीब दस दिन पहले उसकी मां ने पास के बाजार से एक हजार रुपये का कंबल खरीदा था, जिसे उन्होंने बड़ी मुश्किल से जुटाए पैसों से लिया था। वही कंबल परिवार के लिए ठंड से बचने का सहारा था।

एक दिन उसकी मां ने कंबल को धूप में सुखाने के लिए छत पर डाल दिया। इसी दौरान नशे की हालत में उस कर्मचारी ने कंबल को जला दिया। जब सतबीर कंबल उठाने छत पर गया, तो उसने देखा कि कंबल आग में जल रहा है। यह दृश्य देखकर उसकी मां की आंखों से आंसू निकल आए, क्योंकि वह कंबल उनके लिए बहुत कीमती था और उसे दोबारा खरीदने की उनकी हैसियत नहीं थी।

सतबीर ने बताया कि कंबल जलने के बाद परिवार को गहरा दुख हुआ। जब उन्होंने उस नशे में रहने वाले व्यक्ति से नुकसान की भरपाई करने को कहा, तो उसने अपशब्दों का प्रयोग किया। इस पूरे मामले में मकान मालिक ने भी कोई समाधान नहीं निकाला और केवल इतना कहकर बात टाल दी कि 'अब जल गया तो जल गया।'

विज्ञान भवन में 'वीर बाल दिवस' पर सम्मानित हुए देश के नन्हे सितारे

बालकनामा रिपोर्टर

26 दिसंबर 2025 को राजधानी के विज्ञान भवन में 'वीर बाल दिवस' के अवसर पर एक भव्य राष्ट्रीय समारोह का आयोजन किया गया। इस गौरवशाली कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न स्कूलों से आए हजारों बच्चों ने भाग लिया। जिन बच्चों को सम्मानित किया जा रहा था, उनके अभिभावक भी इस समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर हमारे समुदाय के दो बच्चे, एहसान और प्रीति, भी कार्यक्रम का हिस्सा बने। दोनों बच्चे एन-86 समुदाय में रहते हैं। इनमें से प्रीति बालकनामा अखबार की एन-86 समुदाय की रिपोर्टर हैं। वह 16 वर्ष की हैं और ग्यारहवीं कक्षा में अध्ययनरत हैं।कार्यक्रम की मुख्य अतिथि माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू थीं। प्रीति ने बताया कि इस समारोह का सबसे भावुक और गर्व का क्षण वह था, जब राष्ट्रपति ने मंच से देश के बहादुर और प्रतिभाशाली बच्चों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार (वीर बाल दिवस ट्रॉफी) प्रदान की। एहसान ने बताया कि इस समारोह में विभिन्न संगठनों और विशेष विद्यालयों से जुड़े बच्चों को उनके साहसिक कार्यों और असाधारण प्रतिभा के लिए सम्मानित किया गया। किसी बच्चे को अपने दोस्त को बिजली के झटके से बचाने के दौरान जान गंवानी पड़ी थी, उसके माता-पिता यह पुरस्कार लेने आए थे। किसी बच्चे ने अपने पिता को मगरमच्छ से बचाया था, तो किसी ने क्रिकेट में शानदार शतक लगाया था। एक छोटी बच्ची को 'वंदे मातरम्' गीत गाने के लिए सम्मानित किया गया, जिसके वीडियो को बीस मिलियन से अधिक बार देखा गया था। इस प्रकार अलग-अलग क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले लगभग बीस बच्चों को सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने बच्चों से मुलाकात की और उन्हें संबोधित करते हुए कहा कि आज के बच्चे ही कल के विकसित भारत के निमार्ता हैं। उन्होंने साहिबजादों के बलिदान को याद करते हुए बच्चों को निडर, साहसी और संस्कारवान बनने की प्रेरणा दी। राष्ट्रपति को सामने से देखने और इस ऐतिहासिक अवसर का हिस्सा बनने पर प्रीति और एहसान बेहद खुश नजर आए। उन्होंने यह अनुभव अपने समुदाय के अन्य बच्चों और अभिभावकों के साथ भी बड़े उत्साह के साथ साझा किया।

परेशानी नहीं देखती बचपन

बातूनी रिपोर्टर छोटू व रिपोर्टर किशन

परेशानी उम्र नहीं देखती साहब। घर परिवार को चलाना है तो परेशानी सहन करनी पड़ती है। नोएडा की कुछ बस्तियों में जब पत्रकार पहुंचे और 12 वर्ष के एक बालक से मिले तो उसने बताया कि इस बस्ती में अधिकतर लोग कबाड़ बीनने और कबाड़ छांटने का काम करते हैं। वह बिहार का रहने वाला है और उसके परिवार में चार सदस्य हैं दो भाई, एक बहन और माताजी। वर्तमान में उसके पिताजी नहीं हैं, उनकी मृत्यु हो चुकी है। जब पिताजी थे तब बच्चे काम नहीं करते थे, लेकिन पिताजी के निधन के बाद समस्याएं बढ़ने लगीं, इसलिए काम करना पड़ गया। उसकी दीदी की शादी हो चुकी है और वह नोएडा में अपनी दीदी के यहां रहकर दूसरों के यहां जाकर कबाड़ छांटने का काम करता है। वह सुबह नौ बजे से लेकर शाम पांच बजे तक काम करता है। कबाड़ बस्ती में आता है और उसके अंदर कई तरह का सामान होता है जैसे गत्ता, प्लास्टिक, लोहा आदि। इन्हें अलग-अलग करके छांटना पड़ता है। जो कबाड़ बिल्डिंगों से आता है उसमें कई तरह का कचरा होता है और उसमें बदबू भी आती है, लेकिन उसे सहन करके काम करना पड़ता है। वर्तमान में वह अपनी दीदी के यहां ही रहता है, वहीं खाना पीना होता है और महीने के जो पैसे मिलते हैं, उनमें से कुछ पैसे दीदी को देता है ताकि घर का खर्च चल सके और जो पैसे बचते हैं, वे घर पर माताजी को भेज देता है क्योंकि उनकी तबीयत ठीक नहीं रहती। इन पैसों से घर में कुछ मदद हो जाती है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बढ़ते कदम संघ के लीडर्स ने दस्तावेजी समस्याओं को लेकर बाल आयोग को सौंपा पत्र

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी
बातूनी रिपोर्टरः रहमत

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने जयपुर की जयसिंहपुरा खोर बस्ती का दौरा किया, जहां बातचीत के दौरान यह जानकारी सामने आई कि बढ़ते कदम संघ के लीडर्स ने शिक्षा में आने वाली प्रमुख रुकावटों, विशेष रूप से आधार, जन्म प्रमाण पत्र और अन्य आवश्यक दस्तावेजों के अभाव को लेकर राजस्थान राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग में सचिव महोदया नसीम खान के नाम एक पत्र सौंपा है। इसी क्रम में 12 वर्षीय बालक रहमत (परिवर्तित नाम) ने बताया कि 14 नवंबर को बाल आयोग में आयोजित बाल दिवस कार्यक्रम के दौरान उसे पहली बार यह जानकारी मिली कि आयोग बच्चों की समस्याओं के समाधान के लिए कार्य करता है। उसी कार्यक्रम में उसे बताया गया था कि यदि उसके दस्तावेजों में कोई समस्या है, तो वह आयोग से सहायता ले सकता है। रहमत ने बताया, 'सचिव महोदया ने मुझसे कहा था कि मैं अपने पुराने दस्तावेज लेकर बाल आयोग आऊँ और उन्होंने भरोसा दिलाया था कि मेरे विद्यालय में प्रवेश न होने की समस्या का समाधान किया जाएगा। इसी उम्मीद के साथ मैंने और मेरे साथियों ने बाल आयोग को पत्र लिखा।' बस्ती के कई अन्य बच्चे भी इसी तरह की समस्याओं से जूझ रहे हैं। किसी के दस्तावेज नहीं हैं, किसी में त्रुटियाँ हैं और कई बच्चों के माता-पिता नहीं हैं, जिसके कारण उनकी पहचान सत्यापित करवाना और भी कठिन हो जाता है। इन सभी बच्चों के नामों की सूची भी पत्र के साथ आयोग को सौंपी गई है। पत्र के माध्यम से यह आग्रह किया गया है कि विभाग विशेष पहल करते हुए दस्तावेज बनवाने या संशोधित करवाने की प्रक्रिया को सरल बनाए, ताकि बच्चे नियमित रूप से विद्यालय जाकर अपनी पढ़ाई जारी रख सकें। बच्चों का यह प्रयास न केवल उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता को दशार्ता है, बल्कि यह भी साबित करता है कि वे अपनी शिक्षा को लेकर कितने गंभीर और सजग हैं।

हुनर के सहारे भविष्य गढ़ती अमरीन

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः अमरीन

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर की बगराना कच्ची बस्ती का दौरा किया, जहां 12 वर्षीय बालिका अमरीन (परिवर्तित नाम) के जीवन से जुड़ी कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ सामने आईं। अमरीन ने बताया कि वह पढ़ाई के साथ-साथ अपने परिवार की आर्थिक सहायता करने के लिए घर पर कान के कुंडल और झुमकों में नगीना लगाने का काम करती है। वह नियमित रूप से विद्यालय जाती है, पढ़ाई में रुचि रखती है और शिक्षकों से सक्रिय रूप से सीखती है। साथ ही, वह अपने सहपाठियों के साथ सकारात्मक संवाद बनाए रखती है और नए मित्र भी बना पा रही है। घर पर अमरीन अपनी माँ के साथ मिलकर कुंडल और झुमकों में नगीना लगाने व उन्हें तैयार करने का कार्य करती है। वह स्वयं एक जोड़ी झुमके तैयार कर लेती है, जो बाजार में लगभग 30 से 40 रुपये में बिकते हैं। अमरीन एक दिन में लगभग 10 जोड़ी झुमके तैयार कर लेती है। उसकी शिक्षा उसके भविष्य के लिए एक मजबूत आधार है, वहीं झुमके

बनाने का यह कौशल उसके लिए एक अतिरिक्त और उपयोगी हुनर बन गया है। हालांकि, स्कूल और घरेलू कार्यों के बीच समय का संतुलन बनाना उसके लिए एक बड़ी चुनौती है।
परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण अमरीन को कम उम्र में ही आर्थिक सहयोग के लिए काम करना पड़ रहा है। यदि उसे नए कौशल सीखने और उचित मार्गदर्शन का अवसर मिले, तो वह भविष्य में अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। बगराना बस्ती की यह बालिका अपनी मेहनत, लगन और जिम्मेदारी के साथ अपने जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास कर रही है।

शादियों में फूल-गमले और लाइट उठाने को मजबूर बच्चे

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक, बातूनी रिपोर्टरः कुमुद

जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों में रहने वाले कई बच्चे आज भी अपनी उम्र से पहले जिम्मेदारियों का बोझ उठाने को मजबूर हैं। आर्थिक तंगी और रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने के लिए ये बच्चे शादी समारोहों में फूल गमले उठाने, लाइट ले जाने और सजावट का सामान ढोने जैसे काम करते हैं। इस काम से उन्हें थोड़ी बहुत आमदनी मिल जाती है जो उनके परिवार की दाल-रोटी चलाने में सहारा बनती है, लेकिन इसके बदले उनका बचपन, शिक्षा और स्वास्थ्य दांव पर लग जाते हैं। ऐसा ही एक दृश्य आगरा रोड स्थित कच्ची बस्ती में देखने को मिला जहां सड़क के किनारे कई बालिकाएं अपनी मां और बड़ी बहनों के साथ लाइट उठाने की प्रतीक्षा कर रही थीं। रिपोर्टर ने जब बालिकाओं से पूछा कि वे यह काम क्यों करती हैं और एक दिन में कितना कमाती हैं, तो 14 साल की बालिका सरोजनी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उन्हें तीन से चार घंटे लाइट उठाने के लगभग तीन सौ रुपये मिलते हैं और उसके पिता की मजदूरी से घर नहीं चलता इसलिए शादी के सीजन में उसे काम पर जाना पड़ता है। 13 वर्षीय बालिका पायल परिवर्तित नाम ने कहा कि वह पढ़ना चाहती है लेकिन कई बार मजबूरी में काम पर जाना पड़ता है क्योंकि घर में पैसों की कमी रहती है। वहीं 11 साल की प्रिया (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उनकी बस्ती से कई बालक और बालिकाएं पड़ोसियों या परिवार के सदस्यों के साथ शादी के सीजन में लाइट उठाने का काम करते हैं। इस काम से बहुत थकान होती है लेकिन अगर काम न करें तो घर में दिक्कतें बढ़ जाती हैं। बच्चों की ये बातें उनके जीवन की उस कठोर सच्चाई को सामने लाती हैं जहां खेल और पढ़ाई की उम्र में उन्हें भारी गमले और तारों का बोझ उठाना पड़ रहा है।

कर्ज के दबाव में करना पड़ा काम

बातूनी रिपोर्टर रमन व रिपोर्टर किशन

अनेक समस्याओं से जूझने के बाद भी सड़क एवं कामकाजी बच्चे हार नहीं मानते और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए लगातार कुछ न कुछ कार्य करते रहते हैं, ताकि उनके घर की आर्थिक स्थिति ठीक बनी रहे।

गुरुग्राम में रहने वाले 14 वर्षीय गोलू (परिवर्तित नाम) ने अपने जीवन के बारे में बताते हुए कहा– 'मैं बिहार का रहने वाला हूं। पहले मैं वहीं रहता था। मेरे परिवार में 6 सदस्य हैं। मेरे पापा मिस्त्री का काम करते थे और मेरी मां घर पर रहती हैं। अचानक मेरी बहन की शादी तय हो गई, लेकिन शादी के लिए हमारे पास इतने पैसे नहीं थे कि हम अच्छे से शादी कर पाएं। इसलिए पिताजी ने बहन की शादी के लिए कुछ कर्ज ले लिया। कर्ज अधिक होने के कारण वह उसे चुका नहीं पा रहे थे। इसी कारण हमारा परिवार गुरुग्राम आ गया। यहां आकर हमने झुग्गी बस्ती में जगह तलाशी और किराए पर रहने लगे। कर्ज का दबाव पूरे घर पर था। कर्ज जल्द से जल्द

चुक जाए, इसलिए मैं भी साइकिल की दुकान पर काम करने लगा। धीरे-धीरे कर्ज चुक ही रहा था कि तभी अचानक झुग्गी तोड़ने का आदेश आ गया और झुग्गी टूट गई। झुग्गी टूटने के बाद हमें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। फिर हमने आसपास दूसरी जगह तलाश की, जहां पर भी झुग्गियां मौजूद थीं। वहां हम फिर से रहने लगे। झुग्गी टूटने के बाद मेरा साइकिल की दुकान वाला काम भी छूट गया, और घर का खर्च चलाने व कर्ज चुकाने के लिए मैंने कबाड़ बीनने का काम शुरू कर दिया। एक दिन रास्ते में मुझे चेतना संस्था के कार्यकर्ता मिले। उन्होंने मुझे सेंटर पर पढ़ने के लिए कहा। लेकिन मेरे दिमाग में घर की सारी समस्याएं घूमने लगीं। मैंने उनसे कहा कि मैं मम्मी-पापा से पूछकर बताऊंगा। शाम को जब मैंने माता-पिता से बात की तो वे मान गए। फिर मैं चेतना संस्था के सेंटर जाने लगा। वहां जाकर बच्चों को देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं भी केंद्र से जुड़ा, ड्राइंग सीखी और कई नई चीजें सीखीं। मुझे बहुत अच्छा लगने लगा और मैं रोज सेंटर जाने लगा। कुछ दिन बाद संस्था के कार्यकर्ता ने मेरा सरकारी स्कूल की चौथी कक्षा में दाखिला भी करवा दिया। अब मैं रोजाना स्कूल जाता हूं और काफी खुश हूं। आज हमारा कर्ज भी चुक गया है।''

ईमानदारी से जीता दिल और सम्मान

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और बच्चों से उनकी समस्याएं एवं उपलब्धियां जानने का प्रयास किया। इसी क्रम में जयसिंहपुरा खोर बस्ती के सड़क और कामकाजी बच्चों ने ईमानदारी और जिम्मेदारी का एक अनोखा उदाहरण पेश किया। लगभग 12 वर्षीय बालक कुबेर (परिवर्तित नाम) ने बताया कि कुछ दिन पहले बस्ती में उसे एक मोबाइल फोन मिला, लेकिन बस्ती के कुछ बड़े लड़कों ने उसे मोबाइल अपने पास रखने या फिर फोन को बेचने की सलाह दी।

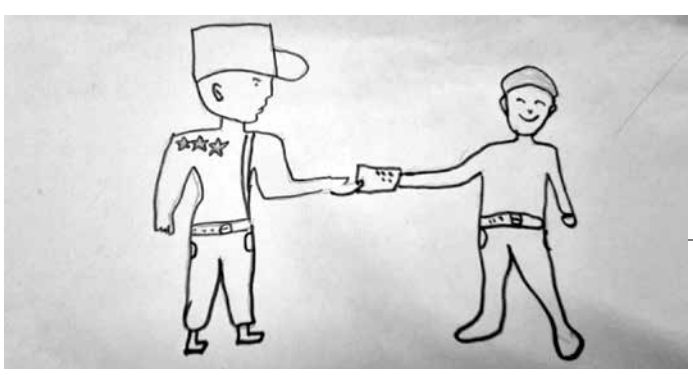

इसके बावजूद उसने ईमानदारी को प्राथमिकता देते हुए उस फोन को अपने पास रखने के बजाय बिना देर किए नजदीकी पुलिस थाने में जमा करा दिया। बालक के इस सराहनीय कदम ने न केवल अधिकारियों को प्रभावित किया बल्कि समुदाय में भी एक सकारात्मक संदेश दिया। पुलिस अधिकारियों ने बच्चे की इस ईमानदार पहल की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा की और सम्मानस्वरूप उसे सौ रुपये का इनाम भी प्रदान किया। अधिकारियों का कहना था कि बच्चों और समुदाय में इस तरह की ईमानदारी समाज में भरोसा और सुरक्षा को और मजबूत बनाती है। बालक द्वारा की गई इस पहल ने बस्ती के अन्य बच्चों को भी प्रेरित किया है कि किसी भी गुम वस्तु को अपने पास रखने के बजाय उसे संबंधित अधिकारियों तक पहुंचाना ही एक जिम्मेदार नागरिक होने का सही परिचायक है। पुलिस प्रशासन ने भी इस कदम को समाज में जागरूकता और अनुशासन बढ़ाने वाला बताया।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

अभिभावकों में भी है बदलाव की जरूरत

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक,
बातूनी रिपोर्टर: सोनू

अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई, पोषण और स्वास्थ्य को लेकर समझ और जागरूक होना बेहद जरूरी है, परन्तु क्या हो यदि अभिभावक ठान लें कि वे किसी चीज के लिए जिम्मेदार नहीं हैं और अपने काम पर जाने की बात को जिम्मेदारी से बड़ी दीवार बना दें, तो बच्चों को क्या दिशा मिलेगी। ऐसी ही एक खबर जयपुर की बापू बस्ती से आई, जहाँ पत्थरों, ईंटों, मकान के मलबे और कचरे के ढेर से भरे मैदान में दो बच्चे सीमेंट के ब्लॉकों से हथौड़े की मदद से लोहा निकाल रहे थे।

बात करने पर बच्चों टोनू 12 वर्ष और मोनू 10 वर्ष (दोनों नाम परिवर्तित) से जब बालकनामा रिपोर्टर ने बात की तो पता चला कि दोनों भाई बापू बस्ती में रहते हैं और इस डंपयार्ड में रोजाना मकान के मलबे में बचे लोहे के टुकड़ों को हाथौड़े से अलग करते हैं और बेचते हैं।

इस तरह वे रोज लगभग 100 रुपये या कभी उससे ज्यादा कमा लेते हैं। हैरान करने वाली बात यह सामने आई कि दोनों बच्चों का स्कूल में दाखिला है और उनका स्कूल इसी डंपयार्ड से कुछ ही दूरी पर स्थित है। जब पूछा गया कि वे स्कूल न जाकर यह काम क्यों करते हैं, तो बच्चों ने बताया कि कभी कभी स्कूल चले जाते हैं।

आगे जानकारी लेने पर पता चला कि अभिभावकों की घोर लापरवाही और बच्चों के प्रति गैर जिम्मेदारी के कारण बच्चे स्कूल छोड़कर लोहा बीनने लगे हैं। पिता शराब पीते हैं और

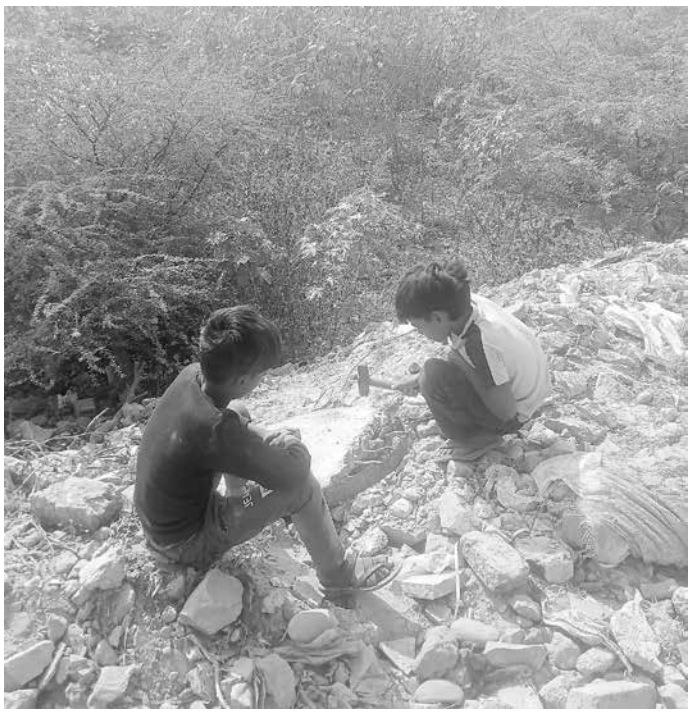

अन्य जगह अवैध संबंध रखते हैं, जिसके कारण घर में आए दिन झगड़े होते रहते हैं।

माता गुटखा खाती रहती है और बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करना, समय पर खाना बनाना और कपड़े धोना जैसे किसी भी दायित्व को नहीं निभाती। पिता देर रात शराब पीकर आते हैं और झगड़ा शुरू होते ही दोनों बच्चे घर से बाहर निकल जाते हैं और उनके सामने यही डंपयार्ड का रास्ता रह जाता है।

बच्चों ने बताया कि उनका नाम कक्षा 4 और 5 में दर्ज है, पर वे पिछले दो महीने से स्कूल नहीं गए हैं। जिस मैदान में बच्चे काम करते हैं, वहाँ की बदबू इंसानों के लिए सहन करना मुश्किल है, फिर भी ये बच्चे वहीं ऊँचाई पर काम करते हैं जहाँ से गिरने का खतरा है और साथ ही बदबू, बीमारियाँ, छेड़खानी और शोषण का भी जोखिम बना रहता है।

बालिका की माँ से जब बालकनामा रिपोर्टर ने बात की तो उन्होंने काम पर जाने का बहाना बना दिया और बच्चों के खुद न पढ़ने की बात कहकर जिम्मेदारी से बचने की कोशिश की।

यही कारण है कि स्कूल जाने वाला बच्चा कबाड़ या लोहा बीनने लग जाता है और एक दिन उसका नाम स्कूल से कट जाता है तथा फिर से स्कूल जाना उसके लिए एक बड़ी चुनौती बन जाता है।

टोनू और मोनू की यह खबर दिखाती है कि जब अभिभावक बच्चों के प्रति आंखें मूंद लेते हैं और उन्हें केवल शाम को घर आकर खाना खाने और सोने वाला जीव मान लेते हैं, तो बच्चे भटक जाते हैं। बच्चे समझाइश, सलाह और पढ़ाई से जरूर बदलते हैं, पर क्या यह जरूरी नहीं कि अभिभावकों को भी बदलने की जरूरत है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बढ़ते कदम के सहयोग से मुश्किल में फँसे परिवार को मिली राहत

बातूनी रिपोर्टर शाजिया व रिपोर्टर किशन

कोई भी आपदा आने से पहले यदि हर व्यक्ति को उसकी जानकारी हो जाए, तो शायद समस्या इतनी बड़ी न बने। जब बरसात अपनी रफ्तार में थी और हर जगह उसका कहर दिखाई दे रहा था, उसी समय पंजाब में रहने वाला एक परिवार पश्चिम दिल्ली आ गया क्योंकि वहां उनका पालन पोषण ठीक से नहीं हो पा रहा था और काम भी नहीं मिल रहा था। मजबूरी में वे कुछ कपड़े और थोड़ा सा सामान लेकर दिल्ली पहुंचे। लेकिन दिल्ली आने के अगले ही दिन उन्हें खबर मिली कि पंजाब में भारी बारिश के कारण बाढ़ आ गई है और बाढ़ की वजह से उनका घर बह गया, घर का सारा सामान भी पानी की तेज लहरों में बह गया। यह सुनकर परिवार के

आंसू रुक नहीं रहे थे। बस्ती के कुछ लोगों ने जब उनसे बात की और पूछा कि वे यहां क्यों आए हैं, तो परिवार ने बताया कि गांव में काम नहीं था, इसलिए रोजी रोटी की तलाश में दिल्ली आए हैं। उन्हें यह अंदाजा भी नहीं था कि इस तरह की आपदा आ जाएगी। उनके पास न पैसे थे, न काम और न ही इस जगह की कोई जानकारी। वे सोच रहे थे कि यदि यहां रहते हुए कोई समस्या आई तो गांव के लोगों से मदद ले लेंगे, पर अब तो वे लोग भी बाढ़ से प्रभावित हैं और उनसे मदद मांगने की स्थिति भी नहीं रही। यह बात सुनकर बस्ती के कुछ लोगों ने उनकी मदद के लिए आगे कदम बढ़ाया। उन्हें कुछ पैसे दिए गए ताकि वे राशन खरीद सकें, पहनने और ओढ़ने के कपड़े भी उपलब्ध कराए गए। अगले ही दिन उनके लिए काम की व्यवस्था भी कर दी गई, जिससे उस परिवार को काफी सहारा मिला। यह पूरी जानकारी बढ़ते कदम की सदस्य 12 वर्ष की शिवानी (परिवर्तित नाम) ने अपने परिवार और पड़ोसियों के साथ साझा की, जिसके बाद सभी ने मिलकर उस परिवार की मदद की। मदद मिलने के बाद परिवार के चेहरों पर जो मुस्कान लौटी, वही इस पूरे प्रयास की असली सफलता थी।

क्या आपदा आने से पहले आपको भी पता चल जाता है?

बातूनी रिपोर्टर शिवानी व रिपोर्टर किशन

क्या आपदा आने से पहले किसी को पता रहता है। यह सभी जानते हैं कि आपदा कभी भी आ सकती है। परंतु आप यह कैसे कह सकते हैं कि अब से यह नहीं होना चाहिए। नोएडा सेक्टर 5 के नजदीक किराए के मकान में रह रही 15 वर्ष की एक बालिका रूही (परिवर्तित नाम) ने अपने नजदीक में हुई समस्या के बारे में बताया। उसने कहा कि हम किराए के मकान में रहते हैं और इस मकान में तीन मंजिल हैं। इस मकान में 30 से अधिक कमरे हैं और सभी परिवार खाना बनाने के लिए बड़े सिलेंडर का इस्तेमाल करते हैं। कुछ दिन पहले हमारे बिल्डिंग में एक बहुत खतरनाक हादसा हुआ जिसे मैं आपके साथ साझा कर रही हूं। इस बिल्डिंग में हमारे घर के पास रहने वाली एक आंटी के घर में नया सिलेंडर आया था। उनकी बच्ची हर बार नए सिलेंडर में रेगुलेटर लगाती है। उस दिन वह कुछ देर के लिए घर का सामान लेने बाहर चली गई। इतने में आंटी ने खुद रेगुलेटर लगाने की कोशिश की। रेगुलेटर कुछ हद तक लगा लेकिन ठीक से फिट नहीं हो पाया, जिस कारण गैस लीक होने लगी। उन्हें यह बात पता नहीं चली और उन्होंने चूल्हा जला दिया। धीरे धीरे कुछ ही मिनटों में गैस ज्यादा फैल गई और सिलेंडर ने आग पकड़ ली। देखते ही देखते भयानक आग लग गई। आसपास के लोगों ने बहुत प्रयास किया। किसी ने पानी डाला, किसी ने ठंडी बोरी का इस्तेमाल किया, लेकिन आग नहीं बुझी। आग बुझाने की कोशिश में कई लोगों के हाथ आदि भी जल गए। फिर फायर ब्रिगेड को फोन किया गया। फायर ब्रिगेड पहुंची और काफी मशक्कत के बाद आग बुझाने में सफल रही। लेकिन तब तक बहुत नुकसान हो चुका था। घर का सारा राशन, कपड़े, चूल्हा, फ्रिज सब जल कर राख हो गया। उनके पास पैसे भी नहीं थे, इसलिए जिस जगह वे काम करते थे वहां के मालिक से पैसे मांगकर लाए और फिर नया सामान लेकर खाना बनाया। जब आग लगी तो मकान मालिक देखने तक भी नहीं आया कि क्या हुआ और कोई मदद कर सकता है या नहीं। जब सब कुछ निपट गया तब वह शाम के समय आया और केवल डांट कर चला गया कि आगे से यह हरकत पूरी बिल्डिंग में न हो। बालिका ने बताया कि यह हमारी गलती थी और इसकी सजा हमें ही सहनी पड़ी।

मां के बाद पिता ने छोड़ा साथ, नाना-मामा ने थामा हाथ

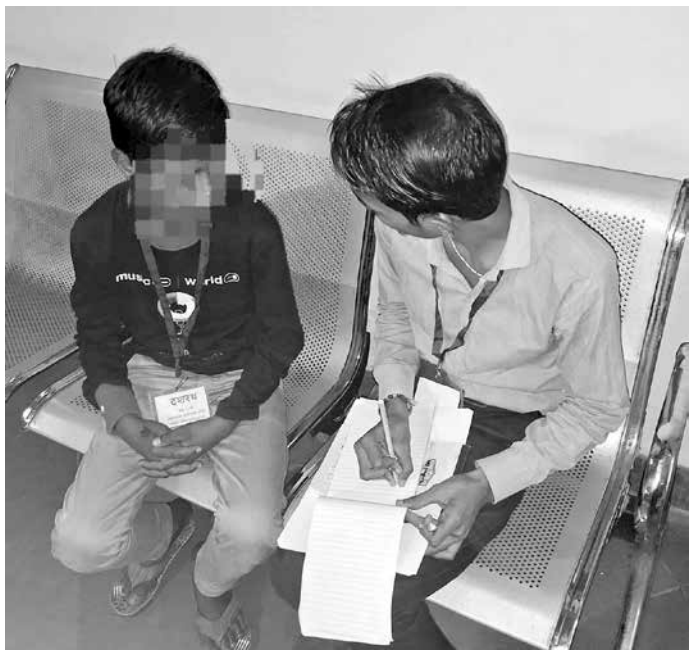

बालकनामा रिपोर्टर किशन

कहते हैं कि पिता का साया हो तो वह अपने बच्चों पर कोई भी समस्या नहीं आने देता, लेकिन जब पिता की आदत ही ठीक न हो तो घर अपने आप बिगड़ने की स्थिति में आ जाता है।

गुड़गांव में रहने वाले 14 वर्ष के एक बालक विहान (परिवर्तित नाम) की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। जब पत्रकारों ने उससे विस्तार से उसके जीवन के बारे में जानने की कोशिश की तो बालक ने बताया कि वह वर्तमान में गुड़गांव में अपने नाना के साथ रहता है। उसके परिवार में कुल छह सदस्य हैं दो बहनें, एक भाई, नाना और दो मामा। वह नाना और मामा के साथ रहता है। बालक ने बताया कि जब वह लगभग छह वर्ष का था, तभी उसकी माता का देहांत हो गया था। उसके बाद एक दो वर्ष तक पिता ने उनकी देखभाल की, लेकिन फिर पिता दूसरी शादी करने के विचार में पड़ गए और शादी के चक्कर में बच्चों को छोड़ दिया। इसके बाद नाना ने उन्हें सहारा दिया और आज वह पिता से बिल्कुल भी कोई संबंध नहीं रखते, न ही उनसे कोई बातचीत होती है। वर्तमान में बालक स्कूल जाता है और चेतना संस्था के एजुकेशन क्लब में भी पढ़ने के लिए जाता है। वहां से पढ़कर लौटने के बाद वह नाना और मामा के साथ समोसे, ब्रेड पकौड़े आदि बेचने में मदद करता है, जिससे घर का खर्च चलता है।

बालक ने बताया कि कभी-कभी जब उससे कोई गलती हो जाती है और नाना या मामा डांट देते हैं, तो उसे अपनी मां की याद आने लगती है, लेकिन नाना और मामा कभी उसे यह एहसास नहीं होने देते कि उसके पास मां का साया नहीं है। पिता के जाने के बाद मां और पिता का प्यार उसे नाना और मामा से ही मिला है और वह अपने नाना मामा के साथ रहकर अपने जीवन में खुश है।

सपनों की उड़ान ही बन रही शिक्षा में रुकावट

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया। इस दौरान आगरा रोड स्थित कच्ची बस्ती में कुछ बच्चे नई साइकिल चलाते हुए दिखाई दिए। रिपोर्टर ने जब उनसे पूछा कि उन्हें यह साइकिलें कहां से मिलीं और वे स्कूल क्यों नहीं जा रहे हैं, तो बच्चों ने बताया कि उन्होंने साइकिल खरीदने के लिए खुद पैसे इकट्ठा किए थे। लगभग 10 वर्ष के राहुल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम सबने पैसे जोड़कर साइकिल खरीदी। पहले दूसरों को साइकिल चलाते देखते थे तो बहुत मन करता था, अब अपनी साइकिल होने से बहुत खुशी है। बस्ती में कई बच्चों को साइकिल चलाने का शौक था, लेकिन पैसों की कमी के कारण सभी बच्चे साइकिल नहीं खरीद पाते थे। इसलिए बच्चों ने मिलकर पैसे जमा किए और आखिरकार साइकिलें खरीद लीं। वर्तमान में इस बस्ती के लगभग दस बच्चों के पास साइकिलें हैं।हालाँकि यह बच्चों के सपनों की पूर्ति है, लेकिन इसका उनकी शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव भी दिखाई दे रहा है। अब बच्चे दिनभर साइकिल चलाने में ही व्यस्त रहते हैं और स्कूल जाना उन्हें अच्छा नहीं लगता। कई बच्चे साइकिल चलाते समय गिर जाते हैं और चोटिल भी हो जाते हैं। छोटे बच्चे बड़ी साइकिल चलाते हैं, जो उनके लिए काफी जोखिमपूर्ण है। स्कूल प्रशासन

ने भी चिंता व्यक्त की है कि बच्चों की उपस्थिति कम हो रही है और वे पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। कई बच्चे साइकिल पर स्कूल जाने के बहाने घर से निकलते हैं, लेकिन रास्ते में घूमने चले जाते हैं, जिससे अभिभावकों को भी उनके स्कूल जाने की सही जानकारी नहीं रहती। स्कूल स्टाफ ने भी कई बार इन बच्चों को स्कूल समय में सड़कों पर साइकिल चलाते देखा है। चिंता की बात यह भी है कि साइकिल चलाने वाले बच्चों में ऐसे बच्चे भी शामिल हैं जिनकी इस वर्ष बोर्ड परीक्षाएं हैं। वे पढ़ाई से अधिक समय साइकिल चलाने में दे रहे हैं, जिससे उनकी शिक्षा पर गंभीर असर पड़ रहा है और वे अपनी पाठ्यपुस्तकें पूरी नहीं कर पा रहे हैं।

लापरवाही से भड़की आग, गैस दुकान में बच्चे झुलसे लेकिन बहादुरी ने बचाई जानें

बालकनामा रिपोर्टर प्रीति कुमारी

एन 86 समुदाय में शनिवार शाम एक गैस की दुकान में लगी भीषण आग से हड़कंप मच गया। इस दर्दनाक हादसे में दुकान चला रहे कुछ बच्चे आग की चपेट में आने से घायल हो गए। हालांकि मौके पर मौजूद एक बहादुर व्यक्ति की सूझबूझ और त्वरित कार्रवाई से बड़ा हादसा टल गया और बच्चों की जान बच गई। हादसे के पीछे लापरवाही बड़ी वजह बनी क्योंकि कुछ बच्चों ने अभिभावकों की गैरमौजूदगी में दुकान खोल ली थी। शाम के समय गैस भरवाने के लिए कुछ ग्राहक दुकान पर पहुंचे। गैस भरते समय सुरक्षा के नियमों की अनदेखी की गई और उसी दौरान एक बच्चे ने माचिस जला दी। दुकान के अंदर पहले से गैस फैली

हुई थी, जिसके कारण आग अचानक भड़क उठी। आग इतनी तेजी से फैली कि दुकान में मौजूद कई बच्चे इसकी चपेट में आ गए। कुछ बच्चों के हाथ बुरी तरह झुलस गए जबकि कुछ के पैर जल गए। घटना के बाद मौके पर अफरा तफरी मच गई और बड़ी संख्या में लोग एकत्र हो गए। इसी बीच दुकान के पास मौजूद एक व्यक्ति ने स्थिति की गंभीरता को समझते हुए बिना अपनी जान की परवाह किए आग की लपटों के बीच घुसकर बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाला। बच्चों को बचाने के दौरान उस व्यक्ति का हाथ भी जल गया। स्थानीय लोगों ने मिलकर आग बुझाने और राहत कार्य में सहयोग किया। घायल बच्चों को तुरंत स्थानीय अस्पताल ले जाया गया जहां उन्हें गंभीर हालत में भर्ती किया गया। डॉक्टरों ने उन्हें गहन निगरानी में रखा। चार दिनों तक चले उपचार के बाद अब सभी बच्चे खतरे से बाहर हैं और स्वस्थ होकर अपने घर लौट चुके हैं।

छोटी लापरवाही, बड़ा खतरा

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक
बातूनी रिपोर्टर: गौतम

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जब जयपुर की मांग्यावास बस्ती का दौरा किया, तब इस दौरान बातूनी रिपोर्टर गौतम ने बताया कि दीपावली की रात जब सभी बच्चे खुशियों से पटाखे जला रहे थे, उसी दौरान लगभग 10 वर्ष के बालक रोहित (परिवर्तित नाम) जो कक्षा 4 में पढ़ता है, के साथ एक छोटी सी दुर्घटना घटित हो गई। रोहित अपने दोस्तों के साथ पटाखे जला रहा था, तभी अचानक एक पटाखा उसके हाथ में फट गया और उसका हाथ गंभीर रूप से जल गया। इस घटना की पूरी जानकारी लेने के लिए बालकनामा रिपोर्टर ने रोहित से मुलाकात की। रोहित ने बताया कि जब वह अपने दोस्तों के साथ बारी-बारी से पटाखे जला रहा था, तभी उसे लगा कि एक पटाखा बुझ गया है, लेकिन

अचानक वही पटाखा उसके हाथ में फट गया। रोहित ने कहा कि अब वह कभी भी बड़ों की देखरेख के बिना पटाखे नहीं जलाएगा। उसके परिवार वाले तुरंत उसे अस्पताल लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार किया और कुछ दिनों तक आराम करने की सलाह दी, जिसके कारण उसे स्कूल से छुट्टियां लेनी पड़ीं। वह ठीक से पेन भी नहीं पकड़ पा रहा है और न ही अपने हाथ की सही तरह से सुरक्षा कर पा रहा है। जब रिपोर्टर ने पूरी बात समझने के लिए फिर से उससे पूछा, तो रोहित ने कहा कि यह दिवाली उसके लिए एक बड़ा सबक बनकर आई है। उसे लगभग एक माह हो गया है स्कूल नहीं जा पा रहा और दैनिक कार्य करने में भी कठिनाई हो रही है। इस घटना से साफ सीख मिलती है कि बिना बड़ों की देखरेख के पटाखे नहीं जलाने चाहिए और हमेशा सुरक्षा नियमों का पालन करना जरूरी है। अगर हम सावधानी बरतें तो त्योहार खुशी का होता है, दर्द और हादसों का नहीं।

घुमंतू बस्ती के बच्चों की पुकार, सुनिश्चित हो शिक्षा का अधिकार

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: साक्षी

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने जयसिंहपुरा खोर सेंटर के बढ़ते कदम लीडर से बातचीत की तो जानकारी मिली कि कुछ दिन पहले घुमंतू जाति रोजगार मेला कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर माननीय उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी जी और विधायक बालमुकुंद आचार्य ने सहभागिता की और बस्ती में उनका बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया गया।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने अपने हाथों से तैयार किए गए कागज के फूल और फूलों का गुलदस्ता भेंट किया। बढ़ते कदम संघ के लीडर्स ने बच्चों की शिक्षा से जुड़ी समस्याओं को लेकर माननीय उपमुख्यमंत्री महोदया को प्रार्थना पत्र सौंपा। प्रार्थना पत्र में प्रमुख मुद्दे थे कि बस्ती से विद्यालय की लंबी दूरी के कारण नियमित पढ़ाई में बाधा आती है, शिक्षा विभाग की गाइडलाइन के अनुसार ट्रांसफर वाउचर योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है और बस्ती के 100 से अधिक बच्चों के दस्तावेज न होने के कारण वे स्कूल प्रवेश और शिक्षा से वंचित हैं। लगभग 12 वर्ष के बालक अभिषेक (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उसके पास आधार कार्ड और दस्तावेज नहीं हैं, इसलिए स्कूल में नामांकन नहीं हो पाया और वह चाहता है कि सरकार उनकी मदद करे ताकि वे भी पढ़ सकें। बच्चों ने इन समस्याओं के समाधान के लिए माननीय उपमुख्यमंत्री जी से जल्द कार्रवाई करने का निवेदन किया। बालिका 13 साल की बालिका साक्षी ने कहा कि उन्हें नेताओं से बात करने का अवसर मिला तो ऐसा लगा कि उनकी बात सुनी जा रही है। साक्षी ने बताया कि वह आगे पढ़ाई करके टीचर बनना चाहती है और उसे शिक्षा जारी रखने के लिए प्रोत्साहन स्वरूप 1000 रुपये की राशि प्रदान की गई। इस कार्यक्रम ने बच्चों को न केवल अपनी समस्याएं रखने का अवसर दिया बल्कि उन्हें यह नई उम्मीद और आत्मविश्वास भी दिया कि उनकी आवाज अब सरकार तक पहुँच चुकी है।

पिताजी की देखभाल के कारण बालक का विद्यालय जाना छूटा

बातूनी रिपोर्टर अरमान व रिपोर्टर किशन

मजबूरियां कई प्रकार से हमेशा हमारे आसपास खड़ी रहती हैं। कब दुख भरी समस्याएं आ जाएं, यह कोई नहीं जानता। यदि शिक्षा पर अच्छा ध्यान जा रहा हो और अचानक कोई समस्या आ जाए, तो शिक्षा से ध्यान भटक जाता है। कुछ ऐसा ही नोएडा में रहने वाले एक बालक टीटू (परिवर्तित नाम) के साथ हुआ। जब पत्रकार उस बालक से मिले और यह जाना कि वह वर्तमान में शिक्षा प्राप्त कर रहा है या नहीं, तो उसने अपनी कहानी साझा की। बालक ने अपने शब्दों में बताया कि वह वर्तमान में 15 वर्ष का है और तीन महीने पहले तक रोजाना स्कूल जाया करता था। वह सातवीं कक्षा में पढ़ता था। उसके परिवार में केवल पिताजी और वह स्वयं हैं, क्योंकि उसकी माता जी का निधन हो चुका है। पिताजी घरों में जाकर पेंट करने का काम करते हैं। वह रोजाना अपने काम पर चले जाते थे और वह सुबह अपने स्कूल के लिए निकल जाता था। अचानक एक दिन पिताजी एक घर में पेंट करते समय तीसरी मंजिल से गिर गए, जिससे उनकी टांग टूट गई और शरीर में गंभीर चोटें आईं। उस समय बालक स्कूल में था। जब उसे इसकी जानकारी मिली तो वह तुरंत अस्पताल पहुंचा। यह दृश्य देखकर वह बहुत दुखी हो गया। घर में न तो कोई काम करने वाला था, न ही पिताजी की देखभाल करने वाला। पिताजी उठ नहीं पा रहे थे और न चल पा रहे थे। इस कारण उसे स्कूल जाना छोड़ना पड़ा और पिताजी की देखभाल में लग गया। इसी वजह से घर में पैसों की समस्या भी आने लगी। फिर वह जिस बस्ती में रहता था, वहीं एक ठेकेदार के पास काम करने लगा। झुग्गी बस्तियों में मिट्टी भराव का काम करता था। इस काम के उसे रोजाना 300 रुपये मिलते थे और यह काम उसने करीब छह महीने तक किया। छह महीने बाद पिताजी के शरीर में कुछ आराम मिला। वर्तमान में वह काम करने के साथ-साथ चेतना संस्था के एजुकेशन क्लब में भी पढ़ने के लिए जाता है। अब उसके पिताजी धीरे-धीरे ठीक हो रहे हैं और काम पर जाने का प्रयास कर रहे हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बड़ी बहन की शादी की वजह से बालिका का छूटा स्कूल

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी
बातूनी रिपोर्टरः टीना

सड़क और कामकाजी बच्चों के जीवन में अनेक समस्याएं मौजूद रहती हैं, फिर भी वे हर समस्या से लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। अचानक आने वाली परिस्थितियों में उन्हें ऐसे निर्णय भी लेने पड़ते हैं, जिनका सीधा असर उनके भविष्य और जीवन पर पड़ता है।

नोएडा सेक्टर 76 के पास रहने वाली लगभग 15 वर्ष की एक बालिका रोजी (परिवर्तित नाम) से बातचीत के दौरान उसकी जीवन कहानी सामने आई। बालिका ने बताया कि मेरी उम्र अभी 15-16 वर्ष है, मैं स्वयं भी एक बच्ची हूं, लेकिन फिर भी मुझे दूसरे बच्चों की देखभाल का काम करना पड़ता है।

यह सुनकर पत्रकार कुछ पल के लिए चौंक गए। जब विस्तार से बात की गई तो बालिका ने बताया कि कुछ महीने पहले तक वह नियमित रूप से कक्षा सातवीं में पढ़ने के लिए विद्यालय जाती थी, लेकिन कुछ समय बाद घर में बड़ी बहन की शादी तय हो गई। पिता ने आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण उसे स्कूल जाने से रोक दिया और कहा कि शादी के लिए पैसों की जरूरत है, इसलिए कुछ समय तक काम करना पड़ेगा ताकि बहन की शादी में मदद हो सके।बालिका ने बताया कि अब वह आसपास की एक बिल्डिंग में एक घर पर बच्चों की देखभाल का काम करती है। वह सुबह साढ़े आठ बजे से रात आठ बजे तक काम करती है और इसके बदले उसे 9000 रुपये प्रति माह मिलते हैं, जो वह अपने माता-पिता को बहन की शादी के लिए दे देती है। उसने यह भी बताया कि जहां वह काम करती है वहां मैडम उसका ख्याल रखती हैं, उसकी सेहत, भोजन और जरूरतों का ध्यान रखती हैं, इस बात से उसे थोड़ी राहत मिलती है। हालांकि, उसने यह भी कहा कि वह पढ़ाई नहीं कर पा रही है और उसकी शिक्षा रुक गई है। पिता का कहना है कि जब बहन की शादी हो जाएगी तो दोबारा उसका स्कूल में दाखिला करा दिया जाएगा।

लहसुन साफ करती नन्ही हथेलियाँ, अधिकारों से दूर होता बचपन

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक, बातूनी रिपोर्टरः पायल

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया। इस दौरान बगराना बस्ती में लगभग 13 वर्ष की बालिका नूपुर (परिवर्तित नाम) लहसुन साफ करते हुए दिखाई दी। रिपोर्टर ने बालिका से बात करने का प्रयास किया और पूछा कि वह यह काम क्यों करती है। बालिका ने बताया कि बस्ती में उसके साथ और भी कई बालिकाएं यह काम करती हैं। इस काम के लिए बालिकाओं को चालीस रुपये प्रति किलो के हिसाब से चार से पांच किलो तक लहसुन साफ करना पड़ता है, जिससे उन्हें दिन के लगभग एक सौ चालीस से दो सौ रुपये तक की कमाई हो जाती है। इस काम का बालिकाओं की पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्योंकि उन्हें स्कूल का काम करने और पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। बालिका पायल ने बताया कि उसके पिता नहीं हैं और उसकी माता ही परिवार का खर्च उठाती हैं, इसलिए परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर है। अपने परिवार की सहायता करने के लिए वह यह काम करती है और इस काम से मिलने वाली आय से परिवार के छोटे छोटे खर्च पूरे करने में मदद मिलती है। इसके साथ ही इस काम में शारीरिक श्रम भी बहुत होता है, जो बालिकाओं के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। बालिकाओं को ऐसे कार्यों से मुक्त कराने के लिए उन्हें सरकारी योजनाओं और सहायता कार्यक्रमों से जोड़ने की आवश्यकता है।

इंटरनेट के दुरुपयोग से बच्चों की पढ़ाई हो रही प्रभावित

बालकनामा रिपोर्टर - संध्या

दिल्ली के शिवाजी पार्क स्थित झुग्गी बस्ती में किए गए सर्वे के दौरान बालकनामा रिपोर्टर ने पाया कि कई बच्चे मोबाइल फोन, ऑनलाइन गेमिंग, सोशल मीडिया और वीडियो रील देखने के कारण पढ़ाई से भटकते जा रहे हैं।

इंटरनेट के बढ़ते दुरुपयोग के चलते बच्चे नियमित रूप से स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। अधिकांश माता-पिता पूरे दिन रोजी-रोटी कमाने में व्यस्त रहते हैं, जिसका फायदा बच्चे उठाते हैं और ऑनलाइन पढ़ाई का बहाना बनाकर मोबाइल फोन अपने पास रख लेते हैं। बच्चे माता-पिता से झूठ बोलकर दोस्तों के साथ गेम खेलते हैं और रील देखते हैं, जबकि माता-पिता इतने जागरूक नहीं होते कि वे जान सकें कि बच्चे मोबाइल पर क्या देख रहे हैं। आज के समय में इंटरनेट और मोबाइल फोन की अधिक लत के कारण बच्चों का ध्यान पढ़ाई से हट रहा है, जिससे उनके अनुशासन, पढ़ाई और व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और कुछ बच्चे स्कूल जाना भी छोड़ रहे हैं। इस स्थिति को देखते हुए बालकनामा रिपोर्टर ने सभी बच्चों को एकत्र कर बैठक की और उन्हें मोबाइल फोन के फायदे और नुकसान के बारे में समझाया। बच्चों को बताया गया कि कम उम्र में मोबाइल का अधिक इस्तेमाल आँखों पर बुरा असर डालता है, नींद की कमी होती है और बच्चे अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं, जिससे कई बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही बच्चों को इंटरनेट के सकारात्मक उपयोग के बारे में भी जानकारी दी गई, जैसे बाल कविताएँ, शिक्षाप्रद कहानियाँ, पढ़ाई से जुड़ी सामग्री और बाल अधिकारों की जानकारी। बैठक के अंत में सभी बच्चों ने यह संकल्प लिया कि वे मोबाइल पर गेम नहीं खेलेंगे और इंटरनेट का उपयोग केवल पढ़ाई और सीखने के लिए करेंगे।

घरेलू तनाव और गलत फैसले ने छीन लिया ममता का साया

ब्यूरो रिपोर्ट

हर मनुष्य के जीवन में हजारों गलतियाँ होती हैं, लेकिन हम अपनी गलतियों को पहले क्यों नहीं समझ पाते। जब वही गलती, घटना बन जाती है, तब हम सिर पकड़कर बैठ जाते हैं और ऐसे में घर के छोटे छोटे बच्चों का जीवन बर्बाद हो जाता है।

नोएडा में एक मूर्ति के पास किराए के मकान में रहने वाले 9 वर्ष के एक बालक रमेश (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उसके परिवार में दो सदस्य हैं उसके पिता और वह स्वयं। करीब आठ नौ महीने पहले की बात है, तब उसके साथ उसकी माता भी रहती थीं, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। बालक कहता है कि जब उसकी माता जीवित थीं तब उसका जीवन काफी अच्छा था। कहते हैं माँ तो माँ ही होती है जो बच्चों का दुख आने से पहले ही दूर कर देती है। जब वह अपनी माता के साथ रहता था तब पिता मिस्त्री का काम करते थे और माता जी कोठियों में काम करने जाती थीं, जबकि वह चौथी कक्षा में पढ़ने जाता था। पिता जो भी कमाते थे, उसमें से कुछ पैसे माता को देते थे और कुछ अपने पास रख लेते थे, जिनसे वे शराब पीते थे। यह बात माता जी को अच्छी नहीं लगती थी और वे पिता को समझाने की कोशिश करती थीं। एक दिन पिता ने अधिक मात्रा में शराब पी ली और रास्ते में गिर पड़े। जब यह बात माता जी को पता चली तो वे उन्हें लेने पहुंचीं और घर लेकर आईं। इस बात को लेकर वे बहुत नाराज और चिंतित थीं। उन्होंने पिता को काफी समझाया और डांटा, लेकिन पिता माने नहीं और नशे में उन्होंने माता जी के साथ मारपीट की। अगले दिन पिता काम पर चले गए, बालक भी स्कूल चला गया, लेकिन रात की घटना माता जी के मन में घूमती रही। गुस्से और टूटे मन के साथ उन्होंने एक गलत कदम उठा लिया। उस समय घर में न पिता थे, न बच्चा। माता जी ने रस्सी लेकर पंखे से लटककर आत्महत्या कर ली। जब आसपास के लोगों को यह बात पता चली तो हड़कंप मच गया, पिता तुरंत घर लौट आए और बच्चे को भी स्कूल से बुला लिया गया। घर आकर जब बालक ने यह दृश्य देखा तो वह बेहोश हो गया। आसपास के लोगों ने पुलिस को सूचना दी। यह सब देखकर पिता घबरा गए और वहां से भाग गए। उसके बाद बालक के नाना-नानी आए, उन्होंने अंतिम संस्कार और बाकी व्यवस्थाएं संभालीं। अब बालक अपने नाना-नानी के साथ रहता है, लेकिन यह सदमा आज भी उसे सताता है और उसे अपनी माता की बहुत याद आती है। जब-जब उसे माता जी की याद आती है, वह रोकर अपना मन हल्का कर लेता है। पत्रकारों ने बालक को समझाते हुए कहा कि जिसका जितना समय होता है, वह उतना ही इस दुनिया में रहता है। अब तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे नाना-नानी हैं, उनके साथ हमेशा खुश रहो।

दस साल की बच्ची चाय बनाते समय झुलसी, हाथ में गंभीर जलन

बालकनामा रिपोर्टर - रितिका
बातूनी रिपोर्टर - नंदनी

गुरुग्राम के नाथूपुर की बस्ती में एक दर्दनाक हादसा सामने आया है, जहाँ बिहार के एक गाँव से आकर अपने परिवार के साथ रहने वाली 10 साल की बच्ची रूही (परिवर्तित नाम) चाय बनाते समय गंभीर रूप से झुलस गई। बालकनामा रिपोर्टर रितिका के इलाके के दौरे के दौरान बातूनी रिपोर्टर नंदनी ने बताया कि बच्ची रोज की तरह घर के कामों में अपनी माँ की मदद कर रही थी। उस दिन उसकी माँ स्वेटर बुनने में व्यस्त थीं, इसलिए बच्ची ने चाय बनाने की ज़िम्मेदारी खुद उठा ली। चाय बन

जाने के बाद जब वह उबलती चाय का बर्तन उतारने लगी, तो अचानक उसका हाथ फिसल गया और पूरा बर्तन गर्म चाय के साथ उसके हाथ पर गिर पड़ा, जिससे उसका हाथ बुरी तरह झुलस गया। हादसे के बाद घर में अफरा-तफरी मच गई और परिवार वालों ने तुरंत बच्ची को नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र ले जाकर प्राथमिक उपचार दिलवाया। डॉक्टरों ने बताया कि जलन गहरी है और पूरी तरह ठीक होने में समय लगेगा, साथ ही कुछ दिनों तक नियमित ड्रेसिंग और दवाइयों की जरूरत पड़ेगी। स्थानीय लोगों का कहना है कि रूही अपनी उम्र से ज्यादा समझदार है और अक्सर घर के कामों में माँ का हाथ बँटाती रहती है, लेकिन इस बार एक छोटी सी चूक के कारण उसे गंभीर चोट का सामना करना पड़ा।

अन्धेरी दुनिया में आई रोशनी की किरण

बालकनामा रिपोर्टरः नितिन

दिल्ली के नेहरू कैंप में रहने वाला 13 वर्षीय मेहरान (परिवर्तित नाम) चेतना संस्था के एक केंद्र पर पढ़ने वाला बच्चा है। गाँव में हुए आपसी विवाद के दौरान उसकी एक आँख में हसुआ लग गया, जिसकी वजह से उस आँख की रोशनी चली गई। पैसों की कमी के कारण समय पर उपचार नहीं हो पाया और एक आँख का इन्फेक्शन दूसरी आँख में भी फैल गया, जिससे धीरे-धीरे मेहरान को दोनों आँखों से दिखना बंद हो गया। अब मेहरान पूरी तरह अपने दोस्तों और परिवार पर निर्भर हो गया। बावजूद इसके, वह रोजाना सेंटर आता रहा और चेतना के प्रयासों से उसका स्कूल में दोबारा दाखिला भी हो गया, परंतु माता-पिता के कामकाजी होने के कारण वह अकेले स्कूल नहीं जा पाता था और फिर उसका नाम स्कूल से कट गया। लेकिन दोस्तों ने उसका साथ नहीं छोड़ा। उन्होंने लगातार उसके माता-पिता को समझाया और एक दिन उनकी मेहनत रंग लाई। दोस्तों ने आपस में पैसे इकट्ठे कर मेहरान की माता को दिए और उन्हें एम्स (अस्पताल) भेजा। वहाँ डॉक्टरों ने जाँच के बाद मेहरान की एक आँख की सर्जरी की, और अब वह एक आँख से पूरी तरह देख पाता है। रोशनी वापस आने के बाद मेहरान सबसे पहले अपने दोस्तों और चेतना के कार्यकताओं से मिला। आज वह फिर से अपने दोस्तों के साथ घूमता है और रोजाना सेंटर आकर पढ़ाई करता है। दोस्तों की कोशिशों से मेहरान की अंधेरी दुनिया में एक बार फिर रोशनी लौट आई है, और वह दिल से अपने दोस्तों व चेतना संस्था का धन्यवाद करता है।

कम उम्र में ट्रकों की सफाई करने को मजबूर मासूम

बातूनी रिपोर्टर - लक्ष्मी बालकनामा

हाल ही में बालकनामा अखबार के रिपोर्टर राजकिशोर जब घाट स्थित बस्तियों में पहुँचे, तो बच्चों से बातचीत के दौरान सामने आया कि पास की ही एक बस्ती में 10-11 वर्ष का एक बच्चा रहता है, जो मूल रूप से बंगाल का रहने वाला है और कई वर्षों से अपने माता-पिता के साथ यहीं रह रहा है। बच्चों ने बताया कि यह बच्चा रोज पास की पार्किंग में जाकर ट्रकों की सफाई करता है, जहाँ वह दो-तीन ट्रकों को साफ कर जो भी पैसे कमाता है, उसी से अपना खाना-पीना चलाता है। जब चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र के बच्चों ने उससे इतनी कम उम्र में काम करने का कारण पूछा, तो उसने कहा कि उसे खाने-पीने और जरूरी चीजें खरीदनी होती हैं, इसलिए वह काम करता है। बच्चों ने यह भी बताया कि वह कभी-कभी दूसरे बच्चों को भी साथ चलकर काम करने और पैसे कमाने का सुझाव देता है। बालकनामा रिपोर्टर जब उस स्थान पर पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि बच्चा सचमुच ट्रकों की सफाई जैसे जोखिम भरे काम में लगा हुआ था, जो स्पष्ट रूप से बाल श्रम की श्रेणी में आता है। बाद में जब रिपोर्टर बच्चे के घर पहुँचे, तो पता चला कि उसके माता-पिता मजदूरी के लिए बाहर गए हुए थे। इस पर रिपोर्टर ने बस्ती के लोगों को बताया कि वे अगले दिन फिर आकर माता-पिता से सीधी बातचीत करेंगे। यह घटना बताती है कि आज भी कई बच्चे अपनी बुनियादी जरूरतें पूरी करने के लिए खतरनाक काम करने को मजबूर हैं और बालकनामा की टीम ऐसे बच्चों को सुरक्षा और शिक्षा से जोड़ने के लिए आगे की कार्रवाई करेगी।

सर्दी के प्रकोप से सड़क से जुड़े बच्चों की मुश्किलें बढ़ीं

बालकनामा रिपोर्टर - अंजलि
बातूनी रिपोर्टर - नंदिनी

हरियाणा में पड़ रही कड़ाके की सर्दी ने सड़क से जुड़े और झुग्गी बस्तियों में रहने वाले बच्चों की परेशानियाँ और बढ़ा दी हैं। बालकनामा की रिपोर्टर अंजलि जब गुरुग्राम के बादशाहपुर स्थित गोगा कॉलोनी की झुग्गी बस्ती पहुँचीं, तो वहाँ सर्दी का गहरा असर साफ दिखाई दिया। बुनियादी सुविधाओं की कमी के कारण यहाँ रहने वाले लोगों के लिए सर्दियों का मौसम बेहद कठिन हो जाता है। बस्ती में पानी दिन में केवल एक तय समय पर आता है, जिसे लोग जमा करके रखते हैं, लेकिन ठंड के कारण वही पानी बेहद ठंडा हो जाता है। आर्थिक तंगी की वजह से लोग बार-बार गैस जलाकर पानी गर्म नहीं कर पाते और मजबूरी में ठंडा पानी पीने व उसी से नहाने को मजबूर हैं। बच्चों ने बताया कि अगर वे अपने गाँव में होते तो आग जलाकर सर्दी से बच जाते, लेकिन यहाँ लकड़ी इतनी महंगी है कि उसे सिर्फ खाना बनाने के लिए ही खरीद पाते हैं। स्कूल जाते समय मिले बच्चों ने कहा कि सर्दियों का मौसम लंबा हो गया है और अधिकतर बच्चों के पास केवल एक ही स्वेटर है, जो धोने के बाद देर से सूखता है, ऐसे में कई बार वे बिना स्वेटर के स्कूल नहीं जा पाते या छुट्टी करने को मजबूर होते हैं। पैसों की कमी के कारण अभिभावक समय पर अतिरिक्त गर्म कपड़े नहीं दिला पाते, जिससे बच्चों की पढ़ाई और स्वास्थ्य दोनों प्रभावित हो रहे हैं और वे सर्दी-जुकाम से परेशान रहते हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि झोपड़ियों में कपड़े सुरक्षित रखने की व्यवस्था नहीं है और चूहे व खराब मौसम के कारण कपड़े जल्दी खराब हो जाते हैं।

पढ़ाई से दूर होता बचपन

बालकनामा रिपोर्टर - राजकिशोर
बातूनी रिपोर्टर - रोहित

बालकनामा अखबार के रिपोर्टर राजकिशोर जब गुरुग्राम के एक मार्केट में दौरा करने पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि दो-तीन छोटे बच्चे सड़क पर आते-जाते लोगों से पेन खरीदने की गुहार लगा रहे थे। बच्चे बार-बार लोगों से कहते दिखाई दिए, 'भैया पेन ले लो, हमने कई दिनों से कुछ खाया नहीं है, हमारी बहन भी भूखी है, सिर्फ. 10 रुपये का पेन है।' अगर कोई व्यक्ति पेन नहीं खरीदता, तो बच्चे उससे खाने के लिए पैसे देने की अपील करने लगते और कई बार पैसे मिलने तक उसका पीछा भी करते थे। रिपोर्टर से बातचीत के दौरान बच्चों ने बताया कि उनके माता-पिता भी रेड लाइट और सड़कों पर काम करते हैं, जहाँ वे गाड़ियों की सफाई कर थोड़े-बहुत पैसे कमाते हैं। माता-पिता ने ही बच्चों को पेन दिलाकर कहा है कि वे लोगों को बेचें और जो भी पैसे मिलें, घर लाकर दें, ताकि खाने-पीने का इंतजाम हो सके। बच्चों ने बताया कि इसी वजह से वे स्कूल नहीं जा पाते और उनका ज्यादातर समय सड़क पर काम करते हुए बीतता है। यह स्थिति साफ तौर पर दिखाती है कि गरीबी के कारण सड़क और कामकाजी बच्चों को पढ़ाई छोड़कर कम उम्र में ही काम करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

सड़क पर काम करने वाले बच्चों की ज़िंदगी खतरे में, तेज रफ़्तार ऑटो ने बच्चे को मारी टक्कर

बालकनामा रिपोर्टर - अंजलि
बातूनी रिपोर्टर - नंदिनी

गुरुग्राम के चक्करपुर की बस्ती में सड़क सुरक्षा की भारी लापरवाही बच्चों की ज़िंदगी के लिए बड़ा खतरा बनती जा रही है। हाल ही में बालकनामा रिपोर्टर रितिका के इलाके के दौरे के दौरान पाया गया कि कई बच्चे सड़क किनारे खेलते और काम करते हैं, जहाँ हर समय तेज रफ़्तार गाड़ियों से हादसे का डर बना रहता है। बस्ती के बातूनी रिपोर्टर विक्की ने बताया कि यहाँ ऑटो, रिक्शा और बाइक बहुत तेज रफ़्तार से चलते हैं और चालक छोटे बच्चों को देखकर भी अपनी गति कम नहीं करते, जिससे बच्चों की जान हर पल जोखिम में रहती है।

हाल ही में इसी लापरवाही के चलते एक गंभीर हादसा हुआ, जब चेतना एनजीओ के सेंटर में पढ़ने वाला बच्चा जीत साइकिल से अपने घर का सामान लेने जा रहा था। तभी पीछे से एक तेज रफ़्तार ऑटो, जिसे एक उम्रदराज व्यक्ति चला रहा था, ने लापरवाही से उसकी साइकिल को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि जीत सड़क पर गिर पड़ा और उसके हाथ में गहरी चोट आई, जिससे खून बहने लगा। आसपास मौजूद बच्चों और लोगों ने तुरंत उसकी मदद की, लेकिन ऑटो चालक बिना रुके मौके से फरार हो गया। विक्की का कहना है कि यह कोई अकेला हादसा नहीं है, क्योंकि चक्करपुर की गलियों में न तो स्पीड ब्रेकर हैं, न चेतावनी बोर्ड और न ही ट्रैफिक की कोई निगरानी व्यवस्था है। ऐसे में बच्चे रोज स्कूल जाते समय, काम करते समय या खेलते समय गंभीर खतरे में रहते हैं। उन्होंने चिंता जताई कि अगर सड़क सुरक्षा की व्यवस्था में जल्द सुधार नहीं हुआ, तो भविष्य में ऐसे हादसे और भी बच्चों की ज़िंदगी को खतरे में डाल सकते हैं।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए एचसीएल फाउंडेशन तथा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471